नोबल पुरुस्कार

विजेता महिला

नदीन गोर्दिमर

दक्षिण अफ़्रीकी लेखिका

मुख्य घटनाएँ

1945 यूनिवर्सिटी ऑफ़ विलवाटर्सरैंड में पढ़ाई

1949 जेरल्ड गव्रोस्की से विवाह. *फ़ेस टू फ़ेस* लघुकथा संग्रह प्रकाशित

1952 शादी टूटी. तलाक

1953 पहले नावेल *द लाइंग डेज* प्रकाशित

1954 रेंहोल्ड कास्सिरेर से विवाह

1958 *अ वर्ल्ड ऑफ़ स्ट्रेंजर* प्रकाशित

1966 *द लेट बुर्जुआ वर्ल्ड* प्रकाशित

1979 *बुर्जेर्स डॉटर* प्रकाशित

1981 *जुलाई पीपलस* प्रकाशित

1991 साहित्य के लिए नोबल पुरुस्कार

1996 *राइटिंग एंड बीइंग* प्रकाशित

1998 *द माउस गन* प्रकाशित

"लेखक की आज़ादी क्या है? दुनिया का एक ऐसा गहरा, प्रबल, और निजी द्रष्टिकोण प्रकाशित करना जो समाज को प्रलिक्षित करे."

1923 - 2014

नदीन गोर्दिमर

दक्षिण अफ़्रीकी लेखिका

शुरू के साल

जब नदीन नौ साल की थीं तो उनकी क्लास के सभी बच्चों को एक कविता लिखने के लिए कहा गया. नदीन ने महान दक्षिण अफ्रीकी नेता के ऊपर कविता लिखी. शुरू की पंक्ति थीं : "दिल के धनी, दिमाग के धनी, कोई झूठ-कपट नहीं, कोई दुष्टता नहीं."

नदीन को यह कविता इतनी पसंद आई कि उसके बाद उन्होंने अनेकों कवितायेँ लिखीं. उसके बाद वो कहानियां भी लिखने लगीं.

नदीन, साउथ अफ्रीका की राजधानी जोहानसबर्ग ने पास स्प्रिंग्स नाम के शहर में रहती थीं. वहां पर सोने की खदानें थीं. जब नदीन तेरह साल की थीं तब उन्होंने जोहानसबर्ग के एक अखबार को अपनी लिखी एक कहानी भेजी. उन्हें तब बहुत आश्चर्य हुआ जब उनकी कहानी "बच्चों के कॉलम" में छपी. उसके बाद से नदीन नियमित रूप से उस अखबार के लिए कहानियाँ लिखने लगीं.

जब उनकी कहानियां परिपक्व हुईं तो वे उन्हें भिन्न पत्रिकाओं को भेजने लगीं. यह बच्चों की पत्रिकाएं नहीं थीं. नदीन अब प्रौढ़ लेखकों के साथ स्पर्धा कर रही थीं. उन्हें तब बेहद ख़ुशी हुई जब *फोरम* नामकी पत्रिका में उनकी कहानी छपी. उस समय वो सिर्फ 15 साल की थीं.

पृष्ठभूमि

रंगभेद

नस्लभेद (एपरथाइड) के दवारा दक्षिण अफ्रीका में गोरे-कालों भिन्न नस्लों को अलग-अलग रखा जाता था. 1948 से 1991 तक नस्लभेद के कानूनों के अंतर्गत आबादी को चार हिस्सों में बांटा गया था – काले, गोरे, एशियन और कलर्ड. कलर्ड में मिश्रित नस्लों के लोगों की शुमार भी होती थी. भिन्न नस्लों को अलग-अलग इलाकों में रहना होता था. लोग अलग नस्ल के व्यक्ति से प्रेम या शादी नहीं कर सकते थे. भिन्न नस्लों के अलग-अलग स्कूल, रेस्टोरेंट, बसें और पार्कों में अलग-अलग बैठने की बेंच थीं. यह कानून स्थानीय काले लोगों के लिए बहुत ज़ालिम था. वो कुल आबादी का 70 प्रतिशत थे. वो अक्सर मजदूरी या घरों में नौकरी करते थे. उन्हें हर समय अपनी जेब में एक पासबुक रखनी पड़ती थी जिसमें उनकी पहचान और काम के स्थान का उल्लेख होता था.

कुशलताओं का विकास

नदीन ने एक बार कहा कि "उनका लालन-पालन रंगभेद के माहौल में हुआ. पर उन्होंने उसे ज्यादा नहीं झेला." उनका मतलब था कि गोरी चमड़ी की वजह से उनके लिए हालात इतने खराब नहीं थे. उस समय साउथ अफ्रीका नस्लवादी था और वहां पर गोरे और कालों को अलग-अलग रखा जाता था. नदीन के स्कूल में और पड़ोस में सिर्फ गोरे बच्चे और लोग थे.

क्योंकि नदीन ने बचपन में बहुत पढ़ा था इसलिए उनका हालात को देखने का नजरिया अपने पड़ोसियों से बहुत अलग था. नदीन को लगा कि उनके देश में "सभी रंगों और प्रकार के लोग थे," फिर भी वो कई लोगों को अपना मित्र नहीं बना सकती थीं. वो उनसे नौकरों जैसा विश्वास कर सकती थीं, बराबरी का नहीं.

नदीन अपनी कहानियों में नस्लभेद की खिलाफ अपने विचार व्यक्त करती रहीं. शुरू में उनकी कहानियां सिर्फ दक्षिण अफ्रीका की पत्रिकाओं में ही छपीं. फिर एक मित्र ने उनसे अपनी कहानियों को विदेशी पत्रिकाओं में भेजने के लिए प्रोत्साहित किया. फिर उनकी कहानियां न्यू-योर्कर और दुनिया कि अन्य प्रसिद्ध पत्रिकाओं में छपने लगीं.

"मेरी कोई राजनैतिक हठधर्मिता नहीं है. मेरे दिमाग में हरेक चीज़ को लेकर बहुत शक है. पर मेरे दिमाग में एक बात पक्की है कि रंगभेद गलत है और उसका किसी भी तरह से बचाव नहीं किया जा सकता है."

1949 में नदीन ने तब तक छपी अपनी कहानियों के संकलन को एक किताब के रूप में छपा. तीन साल बाद उन्होंने इसी तरह अपनी दूसरी किताब छापी. उस बीच वो इक नावेल लिखती रहीं जो गोरी नस्ल के लोगों के ज़ुल्मों के बारे में था.

उनका पहले नावेल *द लाइंग डेज* ने उनके बाद के लेखन की दिशा तय की. उन्होंने अपनी सभी पुस्तकों में नस्लवाद और रंगभेद का बहुत व्यक्तिगत तरीके से वर्णन किया है. उन्होंने दिखाया है कि नस्लवाद और रंगभेद लोगों की निजी ज़िन्दगी और आपसी रिश्तों को कैसे प्रभावित करता है.

क्योंकि नदीन ने अपनी पुस्तकों में सरकार पर आक्रमण नहीं किया, शायद इसलिए उनकी किताबें छपने दी गईं. पर जैसे-जैसे दक्षिण अफ्रीका में हालात और ख़राब होते गए वो नस्लवाद और रंगभेद के खिलाफ खुल कर लिखने लगीं. इससे उन्हें पूरी दुनिया में बहुत शोहरत और सफलता मिली पर दक्षिण अफ्रीका की सरकार उससे बिल्कुल खुश नहीं हुई.

1986 में नदीन जोहानसबर्ग के पास स्थित अलेक्सैनडरा गईं. वो काले लोगों का एक शहर था. वहां जाकर उन्होंने राजनैतिक कार्यकर्ताओं की समाधियों पर फूल-मालाएं चढ़ाईं.

पृष्ठभूमि सेंसरशिप

दक्षिण अफ्रीका की सरकार का अखबारों, किताबों में क्या छपता है और टेलीविज़न पर क्या दिखाया जाता था इस बात पर पूरा नियंत्रण था. 1963 में सरकार ने नया कानून - पब्लिकेशन और एंटरटेनमेंट एक्ट पारित किया. इस कानून के अनुसार लोगों को दक्षिण अफ्रीका की सरकार के खिलाफ कुछ भी लिखने पर पाबन्दी थी. इसमें सरकार की सीढ़ी आलोचना तो शामिल थी ही. पर अगर कोई दो अलग-अलग नस्लों के लोगों के बीच के प्रेम के बारे में लिखता तो वो भी गैर-कानूनी था क्योंकि दो अलग-अलग नस्लों बीच में शादी पर पाबन्दी थी.

उपलब्धियां

नदीन का दूसरा नावेल – *ए वर्ल्ड ऑफ़ स्ट्रेंजरस* एक ब्रिटिश मेहमान के बारे में है जो दक्षिण अफ्रीका में दोनों गोरों और कालों से दोस्ती बनाता है. वो नावेल 1958 में छपा पर सरकार ने उसके पेपरबैक संस्करण पर पाबन्दी लगा दी. जब नदीन ने पाबन्दी का कारण पूछा तो उन्हें बताया गया कि उनके नावेल से "देश की परंपरागत नस्ल नीति कमज़ोर होती थी."

बाद में नदीन की दो अन्य पुस्तकों के छपने पर भी सरकार ने पाबन्दी लगाई : *द लेट बुर्जुआ वर्ल्ड* और *द बुर्जेर्स डॉटर*. यह दोनों नदीन के सबसे लोकप्रिय नावेल थे. उसके बावजूद दक्षिण अफ्रीका के लोगों को उन्हें पढ़ने से वंचित रखा गया.

पर इन पाबंदियों का नदीन पर कुछ खास असर नहीं पड़ा. नदीन ने अपनी कहानियां और नावेल लिखना ज़ारी रखा. इस बीच उन्हें जहाँ भी मौका मिलता वो नस्लवाद और रंगभेद की कड़ी आलोचना करतीं. वो बार-बार सेंसरशिप नियमों की आलोचना करतीं जिनके कारण काले लेखकों बहुत सज़ा भुगतनी पड़ी थी. जब सरकार को कोई लेख खराब लगता तो उसके लिए काले लेखकों को गोरों की अपेक्षा कहीं कड़ी सजा मिलती. आलोचनात्मक लेखों के लिए नदीन पर सिर्फ पाबन्दी लगती पर काले लेखकों को उनके लिए जेल भेज दिया जाता.

इससे बहुत से काले लेखक इतने निराश और हताश हुए कि उन्होंने लिखना ही बंद कर दिया. ऐसे अश्वेत लेखकों की मदद के लिए नदीन ने 1987 में *कांग्रेस ऑफ़ साउथ अफ्रीकन राइटरस* की स्थापना की. उसके अधिकांश मेम्बर काले थे.

तब तक नदीन पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो चुकी थी –नस्लवाद और रंगभेद की अपनी आलोचना और दक्षिण अफ्रीका के बारे में अपनी पुस्तकों के लिए. दुनिया की महानतम लेखिका के रूप में 1991 में उन्हें नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया. साहित्य के लिए इस पुरुस्कार को जीतने वाली वो दक्षिण अफ्रीका की पहली नागरिक थीं.

जब नदीन ने नोबल पुरुस्कार की घोषणा के बारे में सुना तो उन्होंने कहा उनके साथ हाल में यह दूसरी सबसे अच्छी बात हुई थी. सबसे अच्छी बात जेल से नेल्सन मंडेला की रिहाई थी. मंडेला की रिहाई के साथ दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद ख़त्म हुआ और वहां की सरकार बदली.

"सेंसर, पाबन्दी और लेखकों का मुंह बंद करके दक्षिण अफ्रीका के लेखकों को प्रताड़ित किया जा रहा है."

नए दक्षिण अफ्रीका में नदीन उन मुद्दों के बारे में लगातार लिखती रहीं जो उनके देश के लिए अहम थे. वो हरेक एक-दो सालों में एक नया नावेल लिखती रहीं. उन्होंने नौ साल की उम्र से लिखना शुरू किया था. अपने पूरे जीवनकाल में उन्होंने 10 से ज्यादा नावेल और सैकड़ों कहानियाँ और लेख लिखे.

1991 में नदीन, बिशप देसमुंड टूटू के साथ. टूटू को 1984 में नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया.

1991 में न्यू-यॉर्क शहर की एक प्रेस कांफ्रेंस में.

- 1975 में दक्षिण अफ्रीका के एक अख़बार ने नदीन को "वुमन ऑफ़ द इयर" पुरुस्कार दिया. नदीन ने पुरुस्कार लेने से इनकार कर दिया. नदीन ने कहा कि वो पुरुस्कार किसी ऐसी अश्वेत महिला को मिलना चाहिए जो नस्लभेद के खिलाफ लड़ाई लड़ रही हो.
- नदीन ने कई पुरुस्कार जीते जिनमें इंग्लैंड का बुकर पुरुस्कार शामिल था.
- नदीन की दो बार शादी हुई. उनकी एक बेटी और एक बेटा है.